

श्री ३॥

कृष्णनयनभङ्ग ॥ ११ ॥ ॐ कौं नमि काय २ ॥ मध्य ॥ १२ ॥ ॐ कौं नमो ॥ पूर्व ॥ १३ ॥
ॐ कौं विद्यायै २ ॥ दक्षिण ॥ १४ ॥ ॐ कौं सतिष्ठायै २ ॥ पश्चिम ॥ १५ ॥ ॐ कौं निवृत्ति
कलाय २ ॥ उत्तर ॥ १६ ॥ ॐ कौं कवचाय २ ॥ ॐ कौं सिद्धि मित्र सि ॥ १७ ॥ कौं भय ॐ
कनसि य ॥ ॐ कौं भूमाय २ ॥ ॐ कौं चरित्र सि ॥ १८ ॥ ॐ कौं पृथ्वी २ ॥ ॐ स्थाना
पृथिवी ॥ पृथ्वी स्थापन ॥ ॥ वध स्थापन ॥ ॐ कौं वधाय २ ॥ ॐ सकय सुक्ति ॥ ॥
ॐ कौं कवचाय २ ॥ ॐ वद सि ॥ वदी स्थापन ॥ ॐ कौं कवचाय २ ॥ ॐ वमन

नता ॥ नयन ॥ पूर्व ॥ ॐ कौं वदकाय २ ॥ न्यास ॥ ॐ कौं हृदयादि ॥ ॐ कौं विष्णु ॥ ॐ कौं
यामीनि ॥ ॐ स्थाना पृथिवी ॥ ॐ कौं द्यावापृथ्वी ॥ ॐ कौं वदनिष्ठ ॥ ॐ कौं नमि द्वात्रयो २ ॥ ॐ
कौं नमि ताननाय २ ॥ ॐ कौं नमि न २ ॥ ॐ कौं ॥ युवाशुभाय २ ॥ वदानी नक कायादिवाद्
क ॥ सकुमाली शिखरीव नदी ॥ ॐ कौं दानपालक ॥ वद ॥ ॐ कौं उचय नवागि न २
ॐ कौं गयय ॥ समुत्तीका कवच न ॥ कौं ॥ ॐ कौं गयय ॥ सनक ॥ नक व ॥
म ॥ ॐ कौं सर्व नमि क ॥ ॐ कौं व नमि सुक नमि सुन ॥ ॥ ॐ कौं मङ्गलाय २ ॥

वाय २॥ ॐ ध्रुवमसि पृथिवी ८० रुद्रवसि दसी १० विरुद्र ८० द्यावातकिदसि दिव
 ८० द्यावातकिदसि ॥ ॐ द्यौः गङ्गाये २॥ ॐ ॐ मम गङ्गा ॥ ॐ द्यौः यमुनाये २॥
 श्री ॥ ॐ यमनय ॥ निगुल ॥ ॐ द्यौः द्याय २॥ ॐ विराट् ८० ॥ ॐ उदय जात ॥ ॐ देवा ८
 वक्ष ॥ युग ॥ ॐ द्यौः यमुनाय २॥ ॐ मृक माजाय ॥ ॐ द्यौः मृदवाय २॥ ॐ मृ
 मिमी ॥ ॐ गङ्गा नावा ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ श्री धर्म ॥ उदय द्यौः विरुद्र ॥ ॐ द्याय ०
 दमासन २॥ ध्यान ॥ निवावत समाहृतं दमवर्तु किरीटिन ॥ गङ्गा मधुसूतनयनं व

ॐ हतिता वलाय २॥ ॐ द्यौः द्यौः २॥ ध्यान ॥ कषिणि वावन द्यामस्तु विवर्मा वयुधि
 गङ्गा वक्ष नृपी निखी द्यौः ८० कामक की सुपाकुल ८॥ निनर ८० गूल पावी चकी पीना द्यौः
 कर्षक ८॥ रुद्र वी दिग लोनी वनिर्धन नृय निता गग ८॥ वद ॥ ॐ उदय ला हिग न निरु ८० सा
 यत न नृद यो कर्षु नैय यक न न मग गावल साधु समुदा ॥ रुद्र स कर्षु नृद स्या तं पार्थ
 ॐ मरुत व स्य कर्षु नैय वनिष्क यकु यतं धृवी यत ॥ रुद्र ॥ पी गय द्या समाहृतं पा
 कुल द्यौः वनि ॥ यद्ग सि द्विपदा गग रुद्रि नृप नैमा मुग ॥ मृग गङ्गादि ॥ ॥

१ वेद ॥ उंगलयांगवप निरुध ॥ काग ॥ २

उंकांगलपतय २ ॥ वान ॥ गजास्यमकदकंश कषुवर्षुशुङ्कुज ॥ मूकमालाक ॥
नशुमललशुकधाविधि ॥ मूकसुनसमावृट कषुवर्षु महादनी ॥ सर्व विधिदुर्ननाथ
गजमज्जनमोमुत् ॥ ॥ मूकगयोदि ॥ उंमका ३ ॥ उंकासुनीकाय २ ॥ उं
रुवुव ४ ॥ उंकासुनीकाय २ ॥ ॥ उंकावधीय २ ॥ उंउद्व ॥ उंकावृहस्यत
य २ ॥ उंकासामाय २ ॥ उंसामायकूनअआन ॥ उंकाजानकूल ४ ॥ कागयोप्रा ४ ॥ कासा
मायाविशुलो नमृग ४ ॥ पिभा न्रीक ४ ॥ कक ८ ॥ नमकीय निमुकायिवकवाक ४ ॥

१ उंउद्वस्य २

उंविधितिरुपविष्टादृहस्यननाधियय ७ ॥ उंमका विष्वाध्यामानादृहस्यननाधियय ७ ॥
ध्वसि ॥ स्वाहामनूहि ४ ॥ यविधियय दिव ४ ॥ स ० ॥ स्यगस्यादिअविनसि ॥ ॥ दिनसिगपा
सि ॥ उंआपादवीयति गृह्णाततसौ गस्यान कषु ४ ॥ सुलरादलाके ॥ तसौ नमका
ऊनय ४ ॥ सुपती मागवपूर्य विरुगाक्यन ७ ॥ उंयगनगीगो मधूना समशगा विधि
यदेन ४ ॥ मगामनूहि ४ ॥ उंकास्वतीययसापि ४ ॥ सनेसासासागपयसायावहस्य ॥
उंआन ४ ॥ उंयदयकधुकिरुका ॥ उंतसूर्यस्यदवे ॥ उंकांगगायगाय २ ॥ उंम

श्री॥

११

कनाजाय ॥ उं ऊं यशर्वदाय २ ॥ उं ॐ वखा ॥ उं ऊं आत्मगवाय २ ॥ उं ऊं विद्यातवाय २ ॥ उं
 द्दुम्बनिक ॥ गण ॥ सनसती ॥ मलालक्ष्मी ॥ उं गलानीवा ॥ उं पोवकान ॥ उं श्रीधरा ॥ उं ऊं
 यमाय ॐ दमासन २ ॥ ध्यान ॥ कनार्क महिषातूटं दलुदुर्गं रुयानकं । कालयागधनं
 कालं ध्याय दक्षिणदिक्कनि ॥ उं ऊं म्मां यमाय दलुदुर्गं महिषासनाय धनं विपनय २ ॥
 वदा ॥ उं यमनदकं ॥ काय ४ ॥ दलुदुर्गं कायमादवा धमो धेकामकावल ४ ॥ कालनूपध
 नानिध धर्मनाजनमा मुत ॥ अगगधदि ॥ उं ऊं निवतवाय २ ॥ उं निवानामासि ॥

उं ऊं ऊं नू अधात्राय २ ॥ उं याग गूजानवागनू ॥ यन्त्रव ॥ उं ऊं कववाय २ ॥ उं मू ॥ मुप
 वा ॥ ग ॥ उं ऊं यलुलीकाय २ ॥ उं यन्त्रानन ॥ उं वरुसागेषु दिवसि ॥ क ॥ उं यदक
 वू ॥ निवृज ॥ उं गन्धद्वारि ॥ ग ॥ मय ॥ उं का ॥ ७ ॥ दू ॥ उं ॐ मा नूजाय ॥ मर्षय ॥ उं
 नका ॥ द ॥ य ॥ य ॥ उं खं जविषदा ॥ नका ॥ यन्त्रनादिवलि ॥ ॥ कीलानिर्या निव
 तात्मा ॥ उं यमयका ॥ यनिष्ठा ॥ जाय ॥ काय ॥ अय ॥ य ॥ दवेदानवगन्धधो यकनाक
 सपन्नग ४ ॥ सर्वमसाधनवका कूर्वमुसमूदायुता ॥ अगगधदि ॥ ॐ निदक्षिणद्वाराचन ॥
 दमा ॥

श्री ४॥

यशः॥ उं शयिदो वी हारं सरोया मूने धं वध्रस्य विरुपा या हि संकारं य नि विरुपा यना
काय य नि विरुपा यं द वेला काय य सिगारं मनूज ला काय य क विगार ७ स र्वे ला लोक
य ४ उ य सि कान म व अ की वे धा था म नि गारं भ वा य वी स प व पू नी न पु का मा य व ज
यि गी न ॥ उं ग य ध्र ग य स्य ध्र ले नि वा वृ ह मू ग्र व न क ४ पु धा सि क ल्य को या वा य धि वी ७३
क ल्य को मा य ड ४ व ध य ४ क ल्य का म य य ४ य थ क म य धो य स य गा ४ य मू ग्र य ४ स म न
सा क ग या वा य धि वी नू म ॥ उं कौं गु का य २ ॥ उं अ न्ना य वि गी ॥ उं कौं गी ने य ना य २ ॥

उं ग न्ना द वी ॥ उं व स य म व स ति ध्र म क र्म ध्र म ग कि ध्र म र्थ ध्र म व्वा ध्र म ग ॥ ध्र म
य क न क ल्य ता ॥ उं स मू ध्र वा नृ म ना अ य क नृ व का नू ॥ ध दि वा अ य ड द न ॥ ग र्ता
य वा व ज सि ग कि वा ४ स म या मू प क म हि वा अ व द्वा ॥ उं न दी य ४ ॥ उं न मि ग य ॥
उं व म्म द्वा ३ अ सि ॥ उं कौं द्रो प व य म य २ ॥ उं अ क ग जा य ॥ उं कौं सा म व द्वा य २ ॥ उं
अ य अ या ॥ उं द्रो इ म वि क ॥ उं ग ल ग ता ॥ उं या व का न ॥ उं यी ध्र ग ॥ उं कौं व नू
गा य नू द मा स न २ ॥ ध्वा न ॥ ना ग पा ग व न इ ल व ला य य नि वि ग द ॥ न ग क

भवती वलय दूरी सकनासनी ॥ ॐ कौमुदी वलय यपा गहसाय जला विपतय २ ॥ वद ॥
 ॐ ॐ ममो वलय ॥ सा ४ ॥ वानुनी कुव ॥ नाधी ॥ सकनासन गमिनी ॥ मवीर्तकान ॥
 श्री पा गहसा नमामुत ॥ अगनादि ॥ ॐ कौनिवगदाय २ ॥ ॐ निवानामा सि ॥ ॐ
 ॐ सधाजागाय २ ॥ ॐ सधाजागा ॥ ॐ ॐ वकवायदू ॥ वदवमाला ॥ ॐ अश्व ॥ ॐ ॐ १४
 गखकशुय २ ॥ ॐ अस्माकमिद ॥ ॐ वदस्यत कुदिव सि ॥ ॐ ॥ ॐ थरेक ॥ निवृज ॥
 ॐ गधेदानी ॥ लमय ॥ ॐ का ॥ २ ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ मानुषाय ॥ ॐ का प्रका ॥ ॐ वरु

शी ४ ॥

द्वी ॥ मशूरसूया ॥ ॐ खजविष्टदा ॥ वक्रा ॥ चन्दना दिवलि ॥ जयंगी वकनाली ॥ ॐ ॐ सूपनि
 ॐ ॐ ॐ यतयका ॥ अयकाय ॥ दददानवगधद्वी ॥ अयश्वरू ४ ॥ अश्व ॥ ॐ ॐ ॥
 ॐ निपयिमदानावने विधि ४ ॥ ॥ ॥ ततउरुनदानावने ॥ ॐ कौमुदी
 वक्राय २ ॥ न्यासादिपर्वद ॥ ॐ ॐ ॐ विष्ट ॥ ॐ गवायामि ॥ ॐ स्थाना पथिवि ॥ ॐ द
 नादयी ॥ ॐ वक्राविष्ट ॥ ॐ ॐ ॐ यतिष्ठाकला दानाय २ ॥ ॐ कौ अश्व ॥ वलय २ ॥
 ॐ कौ दयी २ ॥ ॐ ॐ ॥ सि दानसुकितादयी पीगवधु वदुर्कुजा ॥ उपल्लुलदक

॥३॥

[illegible]

22

ॐ नमः शिवाय ॥ ह्रीं नमः शिवाय ॥ पद्मं पद्मं मास्यहं ॥ अंगनमादि ॥ ॐ ति व सुपूजा ॥ ॥
पश्चिमस्य दक्षिणे अंग ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं अंगाय नमः ॥ अंगु मूर्ति य २ ॥ ॐ नमः शिवाय
॥ ॐ नमः शिवाय पश्चिमं शक्ति कपूरिका ॥ श्रीं ॥ सर्वेषां शक्ति कर्तृत्वं तं
कानि पृष्टि दायक ॥ तयो न वं विना याथ पूजय श्रुत्वा नि ॥ ॐ दद ॥ ॐ शोः ॥
हि ॥ ॐ शुभं ॥ ॐ ॥ शक्तिकाय नमः मुख्यं पूष्टिकाय नमः ॥ मुनि ॥ सदा समाधेयं
नमः कुरु नमः विघ्ननाशनं ॥ अंगनमादि ॥ ॐ ति शक्ति कपूरिका ॥ नमः विविध ॥ ॥

श्री॥

उपादिकलपयुजा॥ॐ फौं फीं फूं सवेकल (ग)थानमः॥ॐ आ डि यु कलपी॥ ॥
नागर्ष॥ अन्नकादिः॥ॐ फौं फूं वरूणाय नमः॥ॐ नमः सुमर्थये॥ ॥ यकय
कपी॥ॐ फौं फीं यकय कलुये॥ॐ अ (अ) मूका वद कनः॥ पुनिनः॥ सुमनः॥ रुव॥ पु (अ) य
कमरुमुजिह्वः॥ विधनदा अ सिखा हा॥ पु (अ) य कलुये माय पूषा युवृ हस्य निः॥
पुवाहवी ददा तुनः॥ खा हा॥ ॥ गीतम् ॥ॐ नी पुन॥ॐ पा व कान॥ ॥
(ग) म य लींग॥ॐ फौं सदा निवासः॥ धीर्न॥ रुवयः॥ ज्ञानय लिङ्गं निर्वमर्वम्

२३

स्थाय युगकार्यं गळे माद हियः॥ यमान्॥ मखला रिक्का यन॥ॐ फौं मूलन॥ॐ अग्नि
पूर्वादि विधिः॥ शिनीथो नूगन नूगः॥ सदवा ३॥ एदि विद्यति॥ कलु स्या लोहने॥ ॥
वूनि कलु (ग) धने॥ ॥ सायान सकयुजन॥ॐ सफ मययः॥ निवे॥ॐ या मिषू॥
ॐ नमः॥ नी रुवा यय॥ वूनि सायान विधिः॥ ॥ यूने नव्य याग युजा मयुजा॥
यामः॥ॐ फौं हदयाय २॥ वून्त्या दिषु रुद्रः॥ॐ या डी षधी॥ पूर्वो जा ता देव रय मि
युग युवा॥ मन्वे नू व रुण मू॥ गगन्धामानि सफव॥ यरु स रान निनी कपी॥ ॥

श्री ॥

उदकवलि ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गल नखा ॥ ॐ कौद्रु
२ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ याग वयस ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वा
हा ॥ ॐ नमो वरुणाय ॥ ॐ धन सिद्धय ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
न ॥ धन वरुणाय ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
सुधा ॥ गङ्गा वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
कुममसिगान् ॥ ॐ गङ्गा वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥

२०

द्विदेव न्याय २ ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
मकीकलानलरुय ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
वशति पथमाङ्गावदा ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
गङ्गा ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
ॐ मयिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥
सवका ॥ ॐ कौंगल यतय २ ॥ वलिगुद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गङ्गा सी तिदी यः ॥ जायमान ॥

२ ॐ ह्रीं कथादात्रयसाधनि विना कृतिं सुखं न वि

नी ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय २ ॥ पूजनं ॥ ॐ ह्रीं अमृतं ॥ ॐ नमो ह्रीं ॥ निर्मलं ॥ ॐ ह्रीं
कवचाय ॥ ॐ ह्रीं अथवा ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय २ ॥ पूजनं ॥ ॐ ह्रीं अमृतं ॥
ॐ कथादममिपुलिनामिदं नयमवा ॥ गच्छ इति यवा ॥ वलि विसर्जनं ॥ ३ पश्य
नी ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय २ ॥ ॐ ह्रीं देवाय मिता जागवदा ॥ दवथा ॥ दृष्टं वरुदुपुजान् ॥ ३
सिद्धिर्न ॥ न्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय २ ॥ ॐ ह्रीं अमृतं ॥ पूजा ॥ अथ गायत्री ॥ ॐ ह्रीं
नवाय विद्महे अनका विताय धीमहि ॥ तन्नो वक्रि ॥ पवा दया ॥ ॐ ह्रीं नौ नौ नौ व

त्वा नाकं कथा कर्त्तुं नमः ॥ अमृतं पूजनं ॥ ॐ ह्रीं अमृतं ॥ ॐ कथानाथिग
अलुवह्नी सदा वृधः सखा ॥ कथास विष्णुया वृणा ॥ कथाक्रमेण विष्णुना वृव
दि ॥ ॥ गायत्री ॥ विधिमतु वकलनाथेन ॥ वृद्धौ युद्धां ॥
तनार्थे वदामि न ॥ ॐ ह्रीं ॥ दक्षिणे ॥ पूष्यराजमकमकुलकृष्ण ॥ यविगुदुदनं ॥
यविगुदु ॥ अथ अथ काली ॥ वनकाली ॥ समार्जनं कृते गिलागं कुलादिदक्षि
णां ॥ ॐ ह्रीं अमृतं ॥ ॐ ह्रीं वरुदुपुजा ॥ सर्वे सिद्धि ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय २ ॥ ॐ

मेधमिद्वस्यत घृतेर्वाधयतामिति। अस्मिन् ह्यशुभं गन्तं ॥ अथ द्वाविंशतिः ॥
 दाय। ॐ नमो देवाय मित्रादिभ्यः सुहाय्य सुहृद्वे नमः। तदेव उक्तं विष्णुतन्त्रे आयुः
 सप्तशतं निश्चलं ॥ यो उक्तं श्रुत्वा ॥ एकं उक्तं कामं ॥ एकं यत्नीतं निश्चयं ॥
 यदंगयनं। ॐ यज्जगत्तय ॥ ॥ वक्रादिभ्यः नमः ॥ ॐ ऊँ सद्यो जगत्तय स्वाहा ॥
 ॐ ऊँ वामदेवाय स्वाहा ॥ ॐ ऊँ अग्न्याय स्वाहा ॥ ॐ ऊँ सत्ययुषाय स्वाहा ॥ ॐ ऊँ
 धर्मनाय स्वाहा ॥ ॐ नित्यं कुर्व्यामहे ॥ ॥ वक्रसंभारं ॥ ॐ ऊँ सद्यो जगत्तय

[illegible]

श्रीः॥

कानिष्ठहृदयश्चाधमश्चाधमश्च मरुतः । यशश्च यशश्च स्वाहा ॥ नूतिजिह्वाधमं ॥ उरुन नमा
दवस्यः यणीत ॥ ॥ दक्षिणस्वधं पिच्छः वज्रा ॥ उवस्यर्गनं ॥ ॥ तगा (नर्दग
निगां ॥ उं जा हृदया यस्वाहा ॥ उं गर्गा अस्था वधीनां गर्गा वनेस्यगीनां । गर्गा विष्णुस्य ३२
रुगस्या (गर्गा अयामसि स्वाहा ॥ नूतिगर्गाधमं ॥ ॥ उं दं निवस ०० ॥ उं स्वस्तिप
कामवच ॥ पूषवर्न ॥ ॥ उं दं निवस्ये वीषट् ॥ उं निवानामासि ॥ गीमको न्नय
नं ॥ ॥ उं दं कववाय हं ०० ॥ उं कायस्वाहा कस्मिन् स्वाहा कगमस्मिन् स्वाहा धीमाधीना

यस्वाहा मनूयजापगयस्वाहा विहं विह्वागायस्वाहा दिह्ये स्वाहा दिह्ये मध्ये स्वाहा दिह्ये
मूमठी कायस्वाहा मनस्वत्ये स्वाहा मनस्वत्ये पावकायस्वाहा मनस्वत्ये वृद्धत्ये स्वाहा पू
ष्णस्वाहा पूष्णपमथायस्वाहा पूष्णनर्धिकायस्वाहा त्वष्टनस्वाहा त्वष्टन उनीयपा
यस्वाहा त्वष्टन पूष नृपायस्वाहा विष्णुवस्वाहा विष्णुव निरूपायस्वाहा विष्णुव गिपि
विष्ठायस्वाहा ॥ जातकर्म ॥ ॥ उं दं नगायस्वाहा ॥ उं गवक्रुद्देवहिगं ॥ निः
कमलं ॥ ॥ उं दं अस्माय हं ०० ॥ उं पात्नयस्वाहा पानायस्वाहा दानायस्वाहा

श्री ४॥

वक्षस्वामा ॥ यथा यथा वक्षस्वामा मनसस्वामा ॥ तामकनन ॥ ॥ ॐ कः ॥ अस्मा
यच्छु ०० ॥ ॐ याः कलिनी ॥ कल्पामान ॥ ॥ ॐ कः नगय ०० ॥ ॐ अन्नयता ॥ अ
न्नयता ॥ ॥ ॐ कः कवेवाय ०० ॥ ॐ मूर्धन दिवा अन्ननिष्ठयिवा वैश्वानन ००
मृत आजागमनि ॥ कवि ० समाजमनिधि जनानामासन्ना पारुजनयनदवाः
स्वाहा ॥ कृताकनन ॥ ॥ ॐ कः निखाय ०० ॥ ॐ रुद्रकलुषिः ॥ कल्पुसदी ॥ ॥
ॐ कः निष ०० ॥ ॐ वग कल्पुगवर्ग कल्पुतामि वक्ता ॥ निरयक्तावनस्पतिर्यल्लिय ॥

गुणयोगकिमिधश्च वानयद्विजिगुठ ॥ वानयनं कवे वामा यजनं च गपायक ॥
निमखलं निपादश्च भवावृत्तं वनयदं ॥ यत्तु सगवर्गं सोमं सर्वेश्वरगुरुषिगं ॥ न
काशवधनं दवं वकमाता विरुषिगं ॥ एवं विविक्तमनसा वद्विमल्लिगु
रुद्रदिदगक्षिया ॥ ॥ ॐ कः दयाय ०० ॥ ॐ सफरं अग्ने समिधः सफ जिह्वा स
फ सपयः सफ धामयि यामि सफलाता ॥ सफ ध्याया यजनि सफ धा निनायन स्वा
हा ॥ सफ जिह्वा कल्पना ॥ ॥ ॐ कः दिन्याय स्वाहा ॥ रुद्रा दिव्या गः ॥ ॐ मुं कन

श्रीः॥

ॐ वृं वरुणाय २॥ ॐ घूं वायवे २॥ ॐ मूं कुवनाय २॥ ॐ फूं ऋणाय २॥ लोक
पाल मरुत युजन ॥ ॥ ॐ फूं हृदयाय २ पूर्व ॥ ॐ फूं कान समुद्राय २॥ ॐ
समुद्रा इमि मेधु मां ३ उदान इ पा ० गुना सम मृगस्य मान ॥ च गस्य नाम उच्छे ४५
यदस्ति जिह्वा देवाना ममृगस्य ना स्तिः ॥ ॐ फूं मृदिकाय २ ॥ ॐ अं वृकान न पका
न विष्कृ कान वसुधन ॥ उच्छेता सिवना न कृष्ण न गवा रुता ॥ मृदिक कृष्ण म
पार्प यन्मया इच्छते कर्त ॥ त्वया हतेन पापेन सर्व पापैः पुमस्यते ॥ श्रीः ॥

तना देव दग क्रिया ॥ ॐ फूं हृदयाय ०० ॥ थानिकल्पना ॥ ॐ कूं गस्य थानि न सिक्कस्य
नास्ति न सिमात्वा दि० सी मामादि० सीत्वा हा ॥ ॐ फूं गस्य नीन ०० ॥ ॐ वसुधन मउ
ना देवा वसुधन मुताः ॥ नथ न वल न जसा रु विद्रि वया दधुः ०० ॥ मउ प
नान ॥ मूल मरुत ०० ॥ ॐ नता मूरं विज्जना तिया निः पुवि गदि द्रियं गकु जिनाय ग
वत उच्छे जहा तिज नना ०० ॥ वीर्य पदान ॥ ॐ फूं कवचाय ०० ॥ ॐ वं जविषद
तिपुत्र ॥ नका पदान ॥ ॐ फूं हृदयाय ०० ॥ ॐ गकूं अस्त्रा वधीनां गकूं वनस्पती

श्रीः॥

नां॥ गङ्गा विश्वस्य ह तस्या॥ नमो भूषणाम सिद्धादा॥ गङ्गा धारनं॥ ॐ ह्रीं गिरि स ०
०॥ ॐ ह्रीं नमो भूषणाम॥ यं सवर्नं॥ ॐ ह्रीं गिरि स ०॥ ॐ गिरि वानामासि॥ गीमको
नयनं॥ ॐ ह्रीं कवचाय ००॥ ॐ पादयस्त्रादा पानाय गि॥ जातकर्म विधिः॥
ॐ ह्रीं नमो भूषणाम॥ लावर्नदद॥ ॐ गङ्गा देवदिनं पूजकाङ्क मन्त्रवत्प ॥ ५२
मग्नदगं जीवमग्नदगं सेंदू यामग्नदगं यवुवामिग्नदगं मदीनाय
मिग्नदगं रूयद्यग्नदगं॥ मूलमकुलद्यतमधूपाय ०॥ मूलमकुलनाडीक

क॥ पुरिक॥ यवधानादि॥ ०॥ दगवलि॥ दवपूजा॥ ०॥ वाङ्मणी पूजा॥ आकाशनादि
वलिपूजा॥ वदक॥ दीपवहिका॥ अक्षरुगगद्यताङ्गि १०८॥ पांयधिरुम
ॐ दवा दिवि॥ ॐ दगवगीतुवनानां॥ ॐ आवमन् ॥ ॐ दमिषु पायधिरु
मिद॥ यक्ष वानूनी॥ वदक॥ ॐ नूनस्य ४००॥ ॐ अविदुर्गनूनस्य ४००॥ ॐ नून
धिपगय ००॥ ॐ पादिनायक ००॥ ॐ सर्वपादि विरुत्पत ००॥ ॐ सर्वशादव
स्य ४००॥ चतुःपादि अम ००॥ पादिना विग्नवदस ००॥ यक्षपादि विग्नवस ००॥

